ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 40 • अंक 158-159 • जुलाई-दिसम्बर, 2013

A Peer Reviewed Research Quarterly

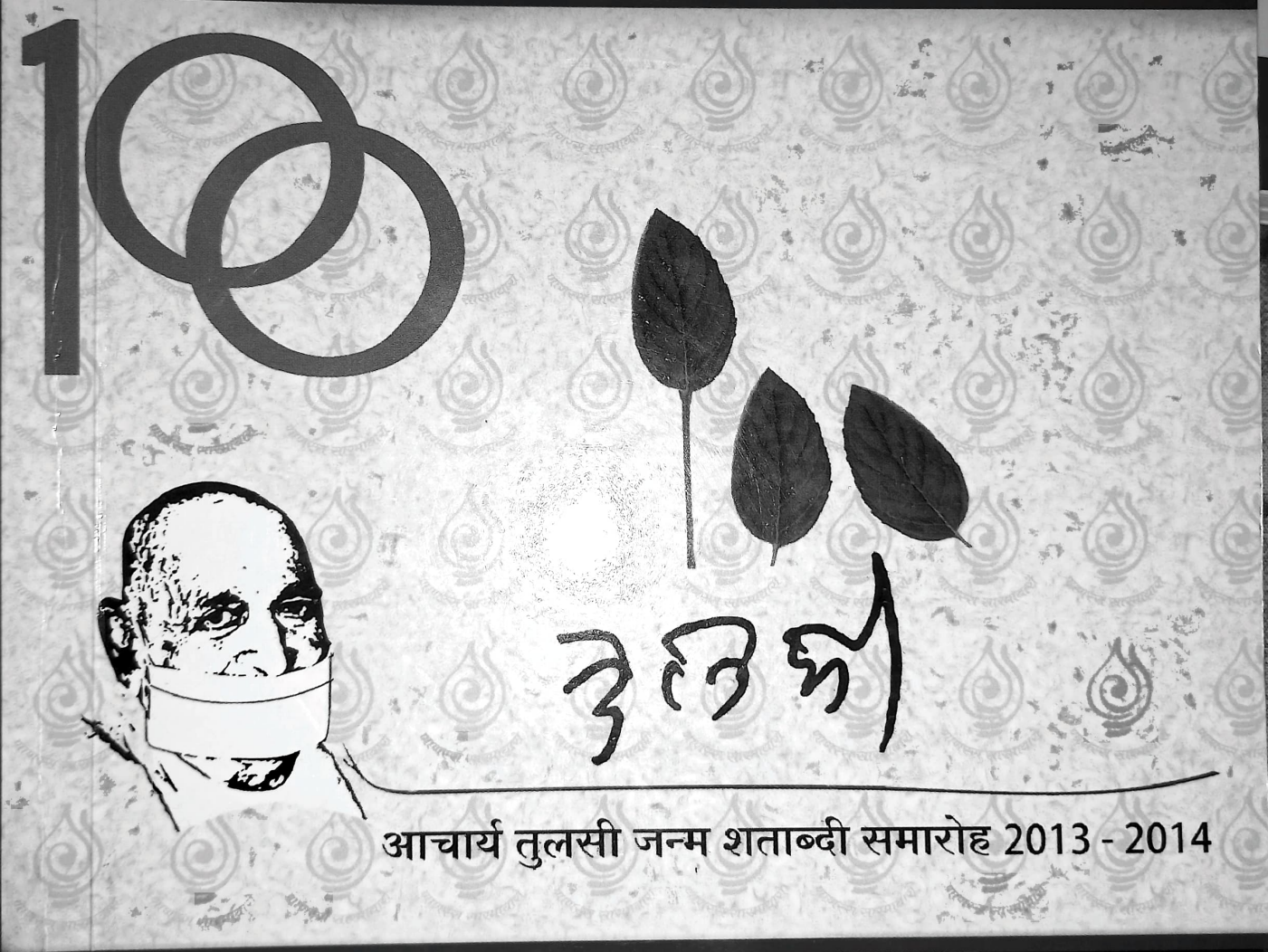

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

विश्वशांति का मार्ग : अहिंसा
(आचार्य तुलसी के सन्दर्भ में)

–डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड,
–विकास शर्मा,

आज संसार में सर्वत्र अशांति का वातावरण है। विकसित राष्ट्र भी अशांत हैं और विकासोन्मुख भी। न धनी सुखी है और न गरीब ही। इसका क्या कारण है? कारण बहुत स्पष्ट है मनुष्य अपने मार्ग से भटक कर उन्मार्गगामी बन गया है। सुख शांति का एकमात्र मार्ग है–अहिंसा। लेकिन न जाने क्यों आदमी ने अहिंसा का राजपथ छोड़कर हिंसा की कंटकाकीर्ण पगडंडी पकड़ ली। उसी का यह दुष्परिणाम भोगना पड़ रहा है। चूंकि हिंसा सदा हिंसा को आमंत्रण देती है, इसलिए वह आगे से आगे बढ़ती रही। बढ़ते-बढ़ते वह भयंकर स्थिति में पहुंच गई है। उसकी तेज लपटों में आदमी झुलसने लगा है। यही कारण है कि हिंसा के प्रति अब घृणा का वातावरण बन रहा है। आदमी उससे छूटना चाहता है। भारतवर्ष की संस्कृति अहिंसा प्रधान संस्कृति रही है। वह कहती है–हिंसा जीवन की किन्हीं परिस्थितियों में मजबूरी हो सकती है पर वह जीवन का मूल्य नहीं है। जीवन का मूल्य अहिंसा है। भारतीय संस्कृति ने इस स्वर को बुलंद किया है। संसार भर के लोग उससे अहिंसा की प्रेरणा लेते रहे हैं। विश्वशांति की दृष्टि से यह अत्यन्त आवश्यक है।[1]

भारतीय संस्कृति आध्यात्म प्रधान संस्कृति है। अध्यात्म की आत्मा है अहिंसा। अहिंसा सब धर्मों का सार है। यह बात सही है कि अहिंसा का मार्ग बहुत जटिल है, पर यह भी उतना ही सच है कि इस पथ पर बढ़े बिना कोई भी महान् नहीं बन सकता। जो लोग अहिंसा के सिद्धान्त को ठीक ढंग से समझ नहीं पाए है, उनके दिमाग में आज भी अहिंसा एक प्रश्नचिह्न बनी हुई है। अहिंसा जीवन का परम आदर्श है इसके परिवेश में अन्य अनेक आदर्श स्वयं उपस्थित हो जाते हैं। सत्य, अहिंसा की परिक्रमा करता है। आचार्य इसकी सहज परिणति है। ब्रह्मचर्य इसका सहचर है। अपरिग्रह

इसका सहोदर है। अहिसां की उत्कृष्ट आराधना करने से शेष तत्व स्वयं आराधित हो जाते हैं। अहिंसा वह सुरक्षा कवच है जो घृणा, वैमनस्य, विद्वेष, प्रतिरोध, भय, आसक्ति आदि घातक अस्त्रों के प्रहार को निरस्त कर देता है। यह जिसे उपलब्ध होता है, वह सदा निश्चित जीवन जीता है। अतीत की स्मृति और भविष्य की आशंका उसके मन की विक्षुब्ध नहीं कर सकती।

आज विश्व की समस्त विचारधाराओं को निचोड़कर देखें तो विश्वशांति के मुख्यतः दो पहलू सामने आते हैं—1. हिंसात्मक, 2. अहिंसात्मक। पहली धारा का उद्देश्य जैसे-तैसे लक्ष्य तक पहुंचना है और दूसरी का उद्देश्य अहिंसा पर निर्भर रहकर लक्ष्य की प्राप्ति करना है। अहिंसा में ताकत है उसमें वीरता की लहरें लहरा रही हैं, मगर उसके प्रयोग के लिए उचित व उपयुक्त भूमिका चाहिए। समूची दुनिया अहिंसा को अपना नहीं सकती, इससे हमें निराश होने और पीछे हटने की आवश्यकता नहीं है।[2] विश्वशांति का प्यासा है। राजनैतिक वातावरण से वह नहीं मिल रही है। शांति और सद्भाव को प्रतिष्ठित करने के पहले अशांति और असद्भाव के कारण जान लेना जरूरी है। रोग का ठीक निदान किये बिना चिकित्सा नहीं की जा सकती। अशांति और असद्भाव का व्यापक प्रसार है और हो रहा है। भय, बलात्कार और असत्वृत्ति अशांति के कारण हैं। वास्तविकता को छिपाना, अपने को बड़ा बताना, परनिन्दा, दम्भचर्या, साम्प्रदायिकता ये सब चीजें, असद्भाव को जन्म देती है। इन सब चीजों का प्रतिकार अहिंसा को संभव है। अहिंसा और अपरिग्रह के आज व्यापक प्रसार की आवश्यकता है।[3]

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा है—मानवीय सभ्यता और संस्कृति का उच्चत्तम विकास बिन्दु है—अहिंसा। हिंसा जीवन यात्रा के साथ जुड़ी हुई है पर वह जीवन के विकास का अंग नहीं है। मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए वह हर क्षेत्र के विकास की यात्रा करता है। सामाजिक स्तर पर भी अहिंसा एक विकास है। समाज की आचार-संहिता अहिंसा के बिना पल्लवित नहीं हो सकती। अध्यात्म की आचार-सहिंता उसके बिना मन ही नहीं सकती। अध्यात्म का पहला बिन्दू अहिंसा है और चरम बिन्दु भी अहिंसा है। प्रत्येक सामाजिक प्राणी अहिंसा को पसन्द करता है, इसलिए कि वह शांति को पसन्द करता है। शांति के बिना सुख नहीं। वह सुख को पसन्द करता है। अतः सुख के लिए शांति और शांति के लिए अहिंसा जरूरी है। हिंसा की जड़ें इतनी गहरी फैली हुई है कि बड़ा मुश्किल हो जाता है उन तक पहुंचना और गहराइयों तक जाना। उनको काटना सरल नहीं है, बड़ा कठिन है, किंतु असंभव नहीं संभव है। उसको काटने के उपाय भी है इनमें सबसे बड़ा उपाय है ध्यान। ध्यान के द्वार इन जड़ों को आसानी से काटा जा सकता है।[4]

हमें पशु-पक्षियों के प्रति जहां तक भी संभव हो अहिंसात्मक नीति रखनी चाहिए। पर हम उसी से संतोष न करें। हमें मानव जीवन के विविध क्षेत्रों में अहिंसा का आचरण करना चाहिए और इस दिशा में उत्तरोतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। हमारे सामने अहिंसा का समग्र रूप रहना चाहिए। छूआछूत, जातिभेद, रंग-भेद की भावना को मिटाना सामाजिक अहिंसा है, गरीब-अमीर, मालिक-मजदूर आदि का भेद मिटाना आर्थिक अहिंसा है। किसी अपराधी से

कठोर व्यवहार न कर उसे सौम्य उपायों से सुधारना, किसी राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र को अपने अधीन न करना और पराधीन देशों को स्वतंत्र होने में सहायता देना राजनीतिक अहिंसा है। किसी को शारीरिक कष्ट न देने के अतिरिक्त मन से भी किसी का बुरा न चाहना और शक्ति भर सबके हित साधन का प्रयत्न करना मानसिक या नैतिक अहिंसा है। इस प्रकार अहिंसा का आदर्श जीवन व्यापी है। हमें ऐसे समाज की रचना में योग देना चाहिए जो सभी दृष्टियों से अहिंसक है। हमें अहिंसा की प्रगति की आशा है। यह केवल इसलिए नहीं कि हम विश्वशांति चाहते हैं। सिर्फ हमारी इच्छा की बात नहीं है मनुष्य के इतिहास और वर्तमान स्थिति पर गम्भीर विचार करने से भी हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि हिंसा की वर्तमान चरम। स्थिति पर आ पहुंचने पर अब मनुष्य को अहिंसा की और ही मुड़ना है और काफी मुड़ना है। अहिंसा की भावना मनुष्य मात्र में है, अहिंसा मनुष्य का स्वभाव ही है। इसलिए वह कुछ कम या ज्यादा सभी देशों में है, सभी देशों में धर्म-प्रवर्तकों ने अहिंसा का उपदेश दिया है। लेखक, कवियों, दार्शनिकों आदि ने अहिंसा के संबंध में अपने हार्दिक उद्‌गार प्रकट किये हैं।

विश्वशांति और अहिंसा की आवश्यकता

विश्वशांति के लिए शस्त्रों का निर्माण और विश्वशांति के लिए शस्त्रों की समाप्ति। इन दो विचारों में कौनसा सही है और कौनसा गलत है। किसे झूठ मानें और किसे सत्य मानें। अगर अणुशस्त्रों को बनाने वालों को गलत माने तो शायद न्याय नहीं होगा। आज कोई समस्या आती है तो संयुक्त राष्ट्र संघ में समस्या के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हैं। आज सब जानते हैं कि किसी एक राष्ट्र ने अणुशस्त्रों का प्रयोग किया तो सारा संसार उसकी चपेट में आ जाएगा।[5]

अहिंसा क्यों?

अहिंसा को समझने के लिए हिंसा के स्वरूप एवं उसके विविध रूपों को समझना आवश्यक है। आचार्यश्री तुलसी हिंसा को बहुत व्यापक अर्थ में देखते हैं। हिंसा के स्वरूप-विश्लेषण में उनके मंथन से निकलने वाले कुछ निष्कर्ष इस भाषा में प्रस्तुत किये जा सकते हैं—राग-द्वेष युक्त प्रवृत्ति से किया जाने वाला हर कार्य हिंसा है। हिंसा मात्र तलवार से ही नहीं होती, मिलावट और शोषण भी हिंसा है। संक्षेप में कहें तो जीवन की हर असंयत प्रवृत्ति हिंसा है। किसी को अतिश्रम लेने की नीति हिंसा है। अपने विश्वास या विचार को बलपूर्वक दूसरे पर थोपने का प्रयास करना भी हिंसा है, फिर चाहे वह अच्छी धार्मिक क्रिया ही क्यों न हो। जैसे दूसरों को मारना हिंसा है, वैसे ही हिंसा को रोकने के लिए आत्मबलिदान से कतराना भी हिंसा है।

हिंसा को त्यागने और अहिंसा को अपनाने का यह सर्वविदित कारण है और सामान्य तौर से लोग यही समझते भी हैं कि हिंसा करने से अन्य प्राणियों को कष्ट पहुंचता है, अतः किसी को कष्ट पहुंचाना उचित नहीं। सभी प्राणियों को सुख प्रिय तथा दुःख अप्रिय लगता

है, सबको अपनी आत्मा प्यारी होती है, ऐसा जानते हुए भय और वैर से मुक्त होकर किसी भी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए क्योंकि जिस व्यवहार से दूसरे को कष्ट पहुंचता है, यदि वही व्यवहार उसके साथ भी किया जाये तो उसे भी आनन्द नहीं बल्कि कष्ट ही मालूम होगा। परन्तु अहिंसा पालन करने का यह प्रधान कारण नहीं है, यद्यपि सामान्य जानकारी में इसी को प्रधानता मिलती है। अहिंसा के मार्ग पर चलने का मुख्य उद्देश्य हैं—आत्म कल्याण। हिंसा करने वाला व्यक्ति दूसरे का अनिष्ट करने से पहले अपना अनिष्ट करता है, हिंसा का भाव मन में लाकर वह अपनी आत्मा का पतन करता है, दूसरों से वैर बढ़ाकर उन्हें अपना शत्रु बना लेता है। इसके विपरित यदि कोई अहिंसा को अपनाता है। सबको समान दृष्टि से या आत्मवत् देखता है तो उसका कोई भी शत्रु नहीं होता।

अहिंसा का सामाजिक स्वरूप

अहिंसा का केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए ही नहीं, अपितु सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसकी उपयोगिता निर्विवाद है। उनके अनुसार अहिंसा वह सुरक्षा कवच है जो घृणा, वैमनस्य, प्रतिशोध, भय, आसक्ति आदि घातक अस्त्रों के बीच में मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाए रख सकता है। वे मानते हैं कि अहिंसा का पथ जटिल एवं कंकरीला हो सकता है, पर महान बनने हेतु इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। अहिंसा वह शक्ति है, जो समाज में मानव को पशु बनने से रोके हुए है। अहिंसा का सामाजिक जीवन में प्रयोग ही नैतिकता है। जिसमें दूसरों के प्रति मैत्री का भाव नहीं हो, करुणा की वृत्त नहीं होती और दूसरों के कष्ट को अनुभव करने का मानस नहीं होता, वह नैतिक कैसे बन सकता है? अहिंसक समाज रचना हेतु आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से सार्थक प्रयास किया। उनका स्वप्न था कि सामूहिक अशांति को जन्म देने वाली हिंसा को मिटाकर अहिंसा प्रधान समाज का निर्माण करना है। उसकी आधारशिला में निम्न नियम कार्यकारी बन सकते हैं—जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ण आदि का भेद होने के कारण किसी मानव की हत्या न करना। दूसरे समाज या राष्ट्र पर आक्रमण न करना। जीवन-यापन के लिए आवश्यक सामग्री के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं का संग्रह न करना। रक्षात्मक युद्ध में भी शत्रुपक्षीय नागरिकों की हत्या न करना।

अहिंसात्मक विरोध

प्रतिरोध हिंसात्मक भी होता है और अहिंसात्मक भी। हिंसात्मक प्रतिरोध क्षणिक होता है किन्तु अहिंसात्मक प्रतिरोध का प्रभाव स्थायी होता है। गांधी जी ने इसका प्रयोग सत्याग्रह आंदोलन के रूप में किया, जो काफी अंशों में सफल हुआ। संत तुलसी मानते थे कि तटस्थता और विनम्रता अहिंसात्मक प्रतिरोध के आधार स्तम्भ हैं। उनकी दृष्टि में किसी भी विचार के प्रति पूर्वाग्रह या अहंभाव टिक नहीं सकता। पक्ष विशेष में बंधकर प्रतिरोध की बात करना स्वयं हिंसा है। वहां अहिंसात्मक प्रतिरोध सफल नहीं होता। प्रतिरोध करने वाले व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं के बारे में उनका मंतव्य है कि अहिंसात्मक प्रतिकार के लिए व्यक्ति

में सबसे पहले असाधारण साहस होना नितांत अपेक्षित है। जो व्यक्ति कष्टसहिष्णु होते हैं, वे विषम स्थिति में भी अन्याय और असत्य के सामने झुकने की बात नहीं सोचते। ऐसे व्यक्ति अहिंसात्मक प्रतिकार में अधिक सफल होते हैं। उनकी कष्ट-सहिष्णुता इतनी बढ़ जाती है कि वे मृत्यु तक का वरण करने के लिए सदा उद्यत रहते हैं। जिन व्यक्तियों को मृत्यु का भय नहीं होता, वे सत्य की सुरक्षा के लिए सब-कुछ कर सकते हैं। प्रतिरोधात्मक अहिंसा का प्रयोग इन्हीं व्यक्तियों द्वारा किया जाता है।

आधुनिक युग में संत तुलसी एक ऐसे युगदृष्टा के रूप में सर्वमान्य हैं, जिन्होंने जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु मौलिक एवं नैतिक धरातल प्रदान किया, उनका अहिंसा दर्शन भी इसी शृंखला की एक सशक्त कड़ी है। संत तुलसी ने अहिंसा को आधुनिक परिवेश में परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। उनके वाङ्मय में अहिंसा की परिभाषाएं अहिंसा के विविध पहलुओं का स्पर्श करती है। शुद्ध अहिंसा है—हृदय परिवर्तन के द्वारा किसी को अहिंसक बनाना। जब तक हिंसक का हृदय परिवर्तन नहीं होता, तब तक वह किसी न किसी रूप में हिंसा कर ही लेगा। अतः साधन-शुद्धि अहिंसा की अनिवार्य शर्त है। बड़ों की रक्षा के लिए छोटों को मारना उचित नहीं। आकांक्षाओं के लिए होने वाली हिंसा जीवन की आवश्यकता पूर्ति करने वाली हिंसा अनिवार्य हो सकती है, पर उसे अहिंसा नहीं कह सकते।[6]

हिंसा थी, है और रहेगी। अहिंसा के लिए प्रयत्न हुआ है, हो रहा है और होता रहेगा। हिंसा और अहिंसा—दोनों की सत्ता त्रैकालिक है। हिंसा जितनी प्रबल होगी, अहिंसा के लिए उतना ही तीव्र प्रयत्न करना होगा। संसार से हिंसा कभी समाप्त नहीं होगी, यह सोचकर मनुष्य की अहिंसक चेतना ने कभी उच्छवास लेना बंद नहीं किया। हिंसा के मुकाबले में अहिंसा की शक्ति कम नहीं है। अपेक्षा है उस शक्ति को जगाने की। शक्ति का जागरण तभी संभव है, जब उसका बोध हो, शोध हो, प्रशिक्षण हो और प्रयोग हो।[7]

मनुष्य का जीवन अशांत है। अशांत भी वह किसी एक तरफ से नहीं, बल्कि चारों ओर से है। ऐसा कहना चाहिए कि उसकी अशांति क्रमशः अधिक व्यापक बनती जा रही है। विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक चारों ओर इस अशांति रूपी आग के शोले बरस रहे हैं। यद्यपि इस अशांति को मिटाने के लिए विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रयत्न हो रहे हैं, पर उनका कोई वांछित परिणाम नहीं आ रहा है। इसका कारण क्या है? एक कारण तो यह हो सकता है कि प्रयत्न या पुरुषार्थ की दिशा सही नहीं है। जब रास्ता ही सही नहीं हो तो व्यक्ति कितनी भी दूर क्यों न चले, मंजिल कैसे मिलेगी। लोग हिंसा के माध्यम से शांति की प्राप्ति का प्रयास कर रहे है, जबकि हमारे आत्मज्ञानी ऋषि मुनियों ने शांति का मार्ग अहिंसा को बताया है। हिंसा अशांति का कारण है, बल्कि सबसे बड़ा कारण है। उसके माध्यम से शांति की प्राप्ति का प्रयत्न करना उतना ही निरर्थक है, जितना खून से सने कपड़े को धोने का प्रयत्न। हिंसा से युद्ध की आग में घी सींचने का काम ही हो सकता है, पानी डालने का नहीं। पानी डालने का काम तो अहिंसा का है।[8]

एक ओर मनुष्य क्रूर बनता है, दूसरी ओर शांति को पुकारता है। कहना चाहिए यह युग क्रूरता और कोमलता की स्पर्धा का युग है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को मिटाकर स्वस्थ रह सके–यह संभव नहीं। अपेक्षा है राष्ट्रों का नेता-वर्ग इस तथ्य को ठंडे दिल और दिमाग से सोचे। मानव समाज को मिटाकर भौतिक स्वार्थ भी नहीं साधा जा सकता। यह सत्य आंखों से ओझल नहीं होना चाहिये। अहिंसा का राजपथ यह है कि दूसरों के अधिकार हड़पने की वृत्ति न जागे। मनुष्य अपने अधिकारों से बाहर न जाये तभी शांति की पुकार सफल हो सकती है–यह तत्त्व शांति के समर्थक को अधिक समझना है। कोई किसी पर अपनी सत्ता, अपने विचार, अपनी प्रणाली न थोपे। शांति की दिशा में यह एक बहुत बड़ा कदम होगा। आचार्य तुलसी को यह विश्वास था–शांतिवादी इस दिशा में स्वयं आगे बढ़ेंगे। हिंसा और सत्ता में विश्वास रखने वालों को यह तथ्य समझाने में यदि वे सफल हुए तो उनकी यह सफलता प्राणीमात्र के लिए एक महान् वरदान होगी।[9]

अहिंसावादी शताब्दियों एवं सहस्त्राब्दियों से अहिंसा पर विचार करते रहे हैं, अनुशीलन करते रहे है फिर भी यह विषय पुराना नहीं पड़ता। अहिंसा जीवन-दर्शन का तत्त्व है। उसकी व्यापकता सामयिक या देशीय नहीं अपितु सार्वकालिक और सांवेदेशिक है। अहिंसा का प्रश्न मानव की स्व-वृत्तियों से सम्बन्धित है, किसी के मरने जीने से नहीं। अहिंसा जीवन तत्त्व है, ज्ञान की सार्थकता है। अहिंसा की उपयोगिता केवल मोक्ष आराधना तक ही सीमित नहीं है जीवन के प्रत्येक कदम में उसकी उपयोगिता निर्विवादतया सिद्ध है।[10] शांति आज के युग की सबसे बड़ी मांग है। प्रत्येक प्राणी का लक्ष्य है शांति। शांति पाने के लिये वह सब कुछ करने को तैयार है। भगवान महावीर की वाणी है–**"सव्वे जीवा सुह साया।"** सभी जीव सुख के लिए आकुल रहते हैं।

प्रश्न है–विश्वशांति का आधार क्या है? विश्वशांति का मौलिक आधार है–वैयक्तिक शांति। इसके अभाव में हजार प्रयत्न करने पर भी विश्वशांति फलित नहीं हो सकती। वैयक्तिक शांति का महान रूप क्षमा और अनाक्रमण में प्रतिबिम्बित होता है। इसलिए शांति चाहने वाले सभी व्यक्तियों का यह कर्त्तव्य है कि वे आज वैयक्तिक चरित्र, उच्चता, संयम, मनुष्य जाति की एकता, अनाक्रमण और निःशस्त्रीकरण के प्रयत्नों को बलवान बनाते हुए विश्वशांति के आधार को पुष्ट बनाने का प्रयत्न करे। आणविक अस्त्रों के परीक्षण चल रहे है। शत्रु-वृत्ति में उनके प्रयोग पर भी स्पष्ट नियंत्रण नहीं रह सकता। यह वर्तमान की स्पर्धा, शास्त्रास्त्रों की होड़ शांति के लिए बहुत बड़ा खतरा है। इसे मैत्री के बिना किसी भी प्रकार नहीं टाला जा सकता।[11]

किसी को अहिंसक बनाने के लिए हिंसा का प्रयोग करना अहिंसा का दुरूपयोग है। अहिंसक कौन? संत तुलसी ने विभिन्न कोणों से अहिंसक की विशेषताओं का आकलन किया है, उनमें से कुछ यहां प्रस्तुत हैं–अहिंसक वही हो सकता है, जिसकी दृष्टि बाह्य भेदों को पार कर आंतरिक समानता को देखती रहती है। अहिंसक सच्चा वीर होता है। वह स्वयं मरकर

दूसरे की वृत्ति को बदल लेता है, हृदय परिवर्तित कर देता है। यह बात सही है कि अहिंसा का मार्ग बहुत जटिल है, पर यह भी उतना ही सच है कि इस पथ पर बढ़े बिना कोई भी महान् नहीं बन सकता। विश्व का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि जो भी व्यक्ति महान् बने उन्हें अहिंसा का आश्रय लेना ही पड़ा है। बिना इस आलंबन के महत्ता का स्पर्श भी नहीं हो सकता। अहिंसा की इस महनीयता और उपयोगिता की प्रेरणा है कि उसके स्वरूप का एक सार्वभौम मौलिक विश्लेषण हो, जो उसे समुचित रूप से परिभाषित कर सके। अहिंसा सत्य का द्वार है। इसमें प्रविष्ट हुए बिना कोई भी व्यक्ति सत्य तक नहीं पहुंच सकता। अहिंसा शब्द में ऐसी मधुर मिठास है जो मनुष्य के पोर-पोर को मधुरिमा से भर देती है।[12]

सन्दर्भ सूची–

1. आचार्य तुलसी, भोर भई, जैन विश्वभारती प्रकाशन, लाडनूं, 1992, पृ. 56.
2. आचार्य तुलसी, प्रवचन पाथेय, जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं, पृ. 264-65.
3. आचार्य तुलसी, शांति के पथ पर, आदर्श साहित्य संघ, सरदारशहर, पृ. 43-44.
4. आचार्य महाप्रज्ञ, अहिंसा के अछूते पहलू, जैन विश्वभारती, प्रकाशन, लाडनूं, 2005, पृ. 20.
5. आचार्य महाप्रज्ञ, अहिंसा के अछूते पहलू, 2005, पृ. 99-100.
6. अहिंसा अमृत, पृ. 114.
7. आचार्य तुलसी, जीवन की सार्थक दिशाएं, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, 2003, पृ. 12.
8. आचार्य तुलसी, समस्या का सागर, अहिंसा की नौका, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, पृ. 113-114.
9. आचार्य तुलसी, प्रवचन पाथेय, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 1991, पृ. 214.
10. आचार्य तुलसी, प्रवचन पाथेय, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 1991, पृ. 230-31.
11. आचार्य तुलसी, मानवता मुसकाए, जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं, पृ. 162.
12. आचार्य तुलसी, राजपथ की खोज, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, 2001, पृ. 55.

–सहायक आचार्य,
अहिंसा एवं शांति विभाग,
जैन विश्वभारती, संस्थान, लाडनूं

जेआरएफ,
अहिंसा एवं शांति विभाग,
जैन विश्वभारती, संस्थान, लाडनूं